JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'केवट–प्रसंग' में 'जीवन–मूल्यों' की अवधारणा'

डॉ0 पूनम राठी
एसोसिएट प्रोफेसर : हिन्दी विभाग
भगिनी निवेदिता कॉलेज
दिल्ली विष्वविद्यालय, दिल्ली
मो0 : 9810810641
ईमेल : bncpoonam@gmail.com

शोध सार : समकालीन दौर मूल्य–संकट का दौर है। आज व्यक्ति 'स्व' तक सीमित होकर स्वार्थी हो गया है। उसके लिए 'मैं' और 'मेरा' भाव ही प्रमुख है, जिस कारण मूल्यों का निरन्तर ह्रास हो रहा है। मूल्यों का ये ह्रास व्यक्ति, परिवार, समाज, देश सभी के लिए हानिकारक है। यूँ तो 'मूल्य' शब्द अर्थशास्त्र का शब्द है जिसका अर्थ होता है–कीमत। किन्तु मानव जीवन के साथ जुड़ने पर यह – आदर्श, कसौटी, जीवन को उन्नति, उत्कर्ष और विकास की ओर ले जाने वाले मानदण्ड या दिशा–निर्देशक के अर्थ में ध्वनित होने लगता है। समाज को सुचारू रूप से चलाने के लिए जीवन–मूल्य अनिवार्य हैं क्योंकि ये मानव के व्यवहार को नियन्त्रित करने वाले नियन्ता हैं। मूल्य–संक्रमण के इस दौर में जीवन को व्यस्थित करने की सुदृढ़ योजना अगर किसी साहित्यकार में मिलती है तो वे हैं – 'गोस्वामी तुलसीदास' और उनकी कालजयी कृति 'रामचरित मानस के विविध प्रसंगो में छोटा सा किन्तु गागर में सागर के अर्थ को सार्थकता प्रदान करता – 'केवट–प्रसंग'।

शब्द संकेत : जीवन–मूल्य, मानव, आदर्श, समरसता, भक्ति, गृहस्थ जीवन।

प्रस्तावना :– गोस्वामी तुलसीदास को भारतीय संस्कृति का उन्नायक स्वीकार करते हुए श्रीधर पराड़कर जी कहते हैं कि – ''वे शाश्वत मूल्य जिनसे मनुष्य बनता है, जब तक लोगों के समक्ष नहीं जाएंगे तब तक न तो वह साहित्य मनुष्य के काम का होता हैं और न मनुष्य के द्वारा स्वीकार किया जाता है।... 520 वर्ष बाद भी लोग तुलसीदास को क्यों पढ़ रहें क्योंकि तुलसीदास जी ने शाश्वत मूल्यों को अभिव्यक्त किया है।''1

सत्य है यह तुलसीदास के शाश्वत मूल्यों की महत्ता ही है जो आज भी उनका साहित्य अध्ययन, मनन और विश्लेषण में उतना ही प्रासंगिक है जितना पहले था। तुलसी के राम केवल तुलसी के राम नहीं हैं वे तो जन–जन के मन में बसने वाले राम हैं। वे जीवन–मूल्यों, आदर्शो और मानवता के प्रतीक हैं। वे कठिन से कठिन स्थिति में जिजीविषा बनाए रख निरन्तर कर्म की प्ररेणा देने के प्रतीक हैं।

तुलसीदास जी ने 'केवट प्रसंग' का निर्माण ऐसी विपरीत स्थितियों में किया है जहाँ राजपद पर प्रतिष्ठित होने वाले श्रीराम अचानक से बदली स्थितियों और माता–पिता की आज्ञा–पालन के लिए सहर्ष राजसी वैभव का त्याग कर भ्राता लक्ष्मण और पत्नी सीता के साथ वनवास के लिए प्रस्थान करते हैं। यहां एक ओर श्रीराम का राज्याभिषेक न होने का दुःख है वहीं दूसरी ओर उनके 14 वर्ष के वनवास से परिवार और प्रजाजन के समक्ष करूणा के साथ–साथ किंकर्तव्य विमूढ़ता की स्थिति है। चारों ओर दुख, करूणा, उदासी के ऐसे कारूणिक परिवेश से बाहर निकालने के लिए तुलसीदास बड़ी चतुराई से केवट–प्रसंग का निर्माण कर सभी को भक्तिभाव से विभोर कर देते हैं। इस प्रसंग की एक–एक पंक्ति मानवीय मूल्यों से हमारा साक्षात्कार कराती है।

तुलसीदास मात्र कवि ही नहीं हैं वे भारतीय संस्कृति के वाहक और पोषक भी हैं। उन्होनें अपने समय के तानाशाही शासको को देखा और समझा था कि वे किस प्रकार ताकत और तलवार के बल से जनता पर अत्याचार कर रहे थे। जनता भयक्रान्त थी, डर के साये में जीवन यापन कर रही थी। इसलिए तुलसीदास ने लोक मंगल के लिए मर्यादा के रक्षक, प्रजा पालक श्रीराम की ऐसे राजा के रूप में उद्भावना की जो 14 वर्ष के वनवास के लिए और अयोध्या से जाने के लिए रथ से गंगा नदी तक पहुंचते हैं। गंगा नदी के समीप पहुंच कर रथ से उतरकर नंगे पाव गंगा के किनारे पर आते हैं। श्रीराम व्याकुल हैं, उन्हें नदी पार करने की शीघ्रता है। वे केवट को पुकारते हैं और शीघ्र नाव द्वारा नदी पार कराने को कहते हैं। किन्तु केवट (जो अपनी नाव द्वारा लोगों को नदी पार कराने का कार्य करता है) विचित्र व्यक्ति हैं, अपने राजा के लिए नाव लाने से मना कर देता हैं –

''मांगी नाव न केवट आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना।''2

यह स्थिति केवल रामराज्य में ही संभव है कि एक साधारण से साधारण व्यक्ति भी अपने राजा के समक्ष अपनी बात बिना किसी डर और भय के कह सकता है। तुलसीदास स्पष्ट करते हैं वही राजा श्रेष्ठ है जो प्रजा के लिए मित्रवत और पिता तुल्य हो।

केवट–प्रसंग के माध्यम से तुलसीदास मानवता और मनुष्यता की एक परिभाषा स्थापित करते हैं। इस प्रसंग में लोक का स्वर बहुत बड़ा है। यह समाज को जोड़ने का कार्य करता है। तुलसीदास समाज में व्याप्त कुरीतियों, विसंगतियों को दूर करके समभाव से स्वस्थ समाज की स्थापना करना चाहते थे। केवट भोई वंश का मल्लाह है लोगों को नाव द्वारा नदी पार कराना उसका व्यवसाय है उससे प्राप्त आय से वह अपने परिवार का पालन–पोषण करता है। उसे समाज में वह सम्मान प्राप्त नहीं है जो श्रेष्ठ जातियों को है। वह अपना खोया सम्मान पाना चाहता है।

केवट चतुर है, तार्किक है और सबसे विशेष कि वह श्रीराम का भक्त है। उसने अपने ईष्ट को पहचान लिया है। अब वह अपनी जन्म–जन्म की इच्छापूर्ति चाहता है। यही कारण है वह बड़े भोलेपन से तर्क सहित किन्तु दृढ़तापूर्वक अपनी बात प्रभु श्रीराम के समक्ष व्यक्त करता हुआ कहता है, मैने आपका रहस्य जान लिया है। आपके चरणों की धूल (रज) में कोई ऐसा जादू हैं जो भी इसको स्पर्श करता है वह नारी बन जाता है। जब कठोर पत्थर इसके स्पर्श से नारी बन सकता है तो मेरी नाव तो लकड़ी की बनी है और लकड़ी तो पत्थर से कमजोर होती है। अगर मेरी नाव नारी बन जाएगी तो, मेरे परिवार का पालन पोषण कैसे होगा। अपनी विवशता बताते हुए केवट बड़े भोलेपन से किन्तु दृढ़ता पूर्वक स्पष्ट शब्दों में कहता है –

''जो प्रभु पार अवसि गा चहहू।

मोहि पद पदमु पखारन कहहू।।''3

ये एक भक्त की अपने प्रभु से हठ है कि जब तक भगवान भक्त की इच्छा पूर्ति नहीं करेंगे, भक्त भी उनकी बात नहीं मानेगा। केवट के भावों को समझकर मंद–मंद मुस्कराते हुए श्रीराम अपने भक्त को आज्ञा प्रदान करते हुए कहते हैं –

''कृपासिंधु बोले मुसुकाई।

सोई करू जेहि तब नाव न जाई।।''4

गोस्वामी तुलसीदास इस प्रसंग के द्वारा एक साथ दो लक्ष्य साधते है 1. राजा ऐसा होना चाहिए जिसके सामने प्रजा अपनी बात बिना भय और बिना किसी संकोच के कह सके। 2. जो भक्त अपने आराध्य को पहचान लेता है वह केवट के समान भव–सागर से तर जाता है। और जो सामने पाकर भी प्रभु को नहीं पहचान पाता वह जन्म–मरण के चक्र में पड़ा रहता है।

प्रभु श्रीराम की आज्ञा पाकर केवट ने उनके चरणों को धोया, और उस चरणामृत का पान किया, अपने परिवार को कराया तथा अपने पितरों (पूर्वजो) को भी चरणामृत का पान करा उन्हें भी मुक्ति प्रदान कराई। देखा जाए तो यह भक्त का लालच नहीं है अपितु ये हमारे हिन्दू धर्म के संस्कार हैं, हमारे जीवन मूल्य हैं कि हम अपने से पहले अपने परिवार और अपने पूर्वजों को महत्व देते हैं। हमारे लिए कुटुम्ब की भावना सर्वोपरि है।

चरण पखारने के उपरान्त केवट प्रेम सहित, प्रसन्न मन से श्रीराम को सीता और लक्ष्मण सहित अपनी नाव में बैठाकर नदी पार कराते है। नदी पार करने के पश्चात् श्रीराम के मन में संकोच का भाव है क्योंकि वे जानते हैं कि नदी पार कराना केवट का व्यवसाय है, इसी से प्राप्त आय उसके परिवार की जीविका का आधार है। श्रीराम के पास इस समय केवट को देने के लिए कुछ भी नहीं है। वे अर्थ के महत्व को समझते हैं तथा ये भी जानते हैं कि बिना पारिश्रमिक दिए कार्य कराना अन्याय है। यदि राजा ही प्रजा के साथ अन्याय करेगा तो समाज में अराजकता फैल जाएगी। तुलसीदास का यह प्रसंग 'सामाजिक समरसता' और 'समाज–व्यवस्था' का श्रेष्ठ उदाहरण है। यह प्रसंग आज कल की 'इस्तेमाल की परम्परा' पर जबरदस्त आघात है। आज भी समाज में ऐसे लोग हैं जो निर्धन और कमजोर का शोषण कर रहे हैं। यह प्रसंग इस प्रकार के शोषक वर्ग पर जोरदार चोट करता है और सत्ताधारियों, शक्तिशाली, समृद्ध व्यक्तियों आदि जो सत्ता और शक्ति के नशे में रहते हैं उन्हें अपने आचरण में सुधार के संकेत देता हुआ मनुष्य को मनुष्य भाव से देखने की प्रेरणा देता है।

तुलसीदास इस छोटे से प्रसंग के द्वारा जहां भक्ति, प्रेम, मानवता आदि की शिक्षा देते हैं वहीं सफल दाम्पत्य का उदाहरण भी हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं। सीता जब देखती हैं कि श्रीराम केवट को पारिश्रमिक न दे पाने के कारण परेशान हैं तो वे बिना कुछ कहे अपने पति के सम्मान और उनके मन के भावों को पूर्ण करने के लिए अपनी मणिरत्न जड़ित अंगूठी उतारकर अपने पति श्रीराम को दे देती हैं –

''पिय हिय की सिय जाननिहारी।

मनि मुंदरी मन मुदित उतारी।।''5

तुलसीदास स्पष्ट करते हैं कि इस प्रकार बिना कुछ कहे, एक दुसरे के मन के भावों को समझ उनके अनुसार आचरण करना ही सफल दाम्पत्य–जीवन का मूलाधार है।

वर्तमान समय में शिक्षित और युवा वर्ग में सहनशीलता, क्षमा, त्याग जैसे भाव समाप्त होते जा रहे हैं और 'मैं' भाव बढ़ता जा रहा है। यह भी सत्य है कि जब पति पत्नी के रिश्तों में 'मैं' भाव आ जाता है तो उनमें आपसी प्रेम–भाव, विश्वास और एक दूसरे के प्रति सर्मपण भाव समाप्त हो जाता है। दाम्पत्य जीवन की नींव कमजोर पड़ जाती है। परिणामस्वरूप तलाक की संख्या बढ़ जाती हैं। तुलसीदास द्वारा रचित यह प्रसंग समसामयिक दौर में सभी के लिए प्रेरणादायक है और मूल्यों की ओर अग्रसर करने वाला है। अगर प्रत्येक पति–पत्नी इस प्रकार के भावों को अपने जीवन में अपना ले तो उनके दाम्पत्य जीवन में किसी भी प्रकार की कोई समस्या उत्पन्न नहीं होगी और वैवाहिक जीवन सफल, सुगम और खुशहाल हो जाएगा।

जब श्रीराम केवट को उसके पारिश्रमिक के रूप में सीता की अंगूठी देने लगते हैं तो केवट प्रभु के चरण पकड़ लेता है और कहता है आज तो आपके आशीर्वाद से मेरे दोष, दुख और दरिद्रता रूपी अग्नि की ज्वाला सभी कुछ समाप्त हो गया। आज मुझे जो सम्मान मिला है उसके उपरान्त अब अन्य कुछ नहीं चाहिए। बस आपकी कृपा दृष्टि मुझ पर यूं ही बनी रहे। लेकिन भक्त को इतने से ही संतोष नहीं है वह अपने अराध्य से बड़ी विनम्रता पूर्वक विनती करते हुए कहता है –

''फिरती बार मोहि जो देबा।

सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा।।''6

भक्त भगवान से वचन लेता है कि जब आप 14 वर्ष के पश्चात् वापिस अयोध्या आए तब एक बार फिर से अपना आशीर्वाद अवश्य प्रदान करें। तुलसीदास स्पष्ट करते हैं कि जो भक्ति प्रेम या सेवा छलरहित, विनम्रता पूर्वक सम्पूर्ण आस्था और विश्वास से की जाती है उसका फल केवट के समान एक न एक दिन अवश्य मिलता है।

इस प्रकार निष्कर्षतः कह सकते हैं कि तुलसीदास का केवट–प्रसंग वास्तव में जीवन मूल्यों का अथाह सागर है। इसमें जितना गहरा जाएंगे उतने ही मूल्यवान मोती प्राप्त होंगे। तुलसीदास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे कहीं भी, कभी भी जीवन मूल्यों को उपदेश के रूप में किसी पर थोपते नहीं हैं अपितु वे जिन मूल्यों को व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए आवश्यक समझते हैं, उन्हें अपने पात्रों के व्यवहार में, आचरण में तथा उनके कार्यो के द्वारा सबके समक्ष रखते हैं। अन्त में जीवन मूल्यों के इसी महत्व को स्वीकार करते हुए डॉ. रामशरण गौड़ जी कहते हैं – ''आज जरूरी है कि हम संत गोस्वामी तुलसीदास को फिर से याद करें। हमारे घरों में रामचरित मानस पर जो धूल जमी है उसे साफ करने की आवश्यकता है। केवल पाठ करने से कोई लाभ नहीं होने वाला। हमें राम के जीवन मूल्यों से सीख लेनी चाहिए।''7

सन्दर्भ :–

1. वक्तव्य : भारतीय संस्कृति के उन्नायक गोस्वामी तुलसीदास : श्रीधर पराडकर,
ई पत्रिका – आपकी माटी, 2 अगस्त 2018, अंक–27
2. रामचरित मानस – गोस्वामी तुलसीदास, अयोध्या काड–99/3 पृ. 391
प्रकाशन रामायण प्रैस, वृन्दावन गेट, मथुरा, संस्करण : 2005

3. रामचरित मानस – गोस्वामी तुलसीदास, अयोध्या काड–99/8 पृ. 391
4. रामचरित मानस – गोस्वामी तुलसीदास, अयोध्या काड–100/1 पृ. 391
5. रामचरित मानस – गोस्वामी तुलसीदास, अयोध्या काड–101/3 पृ. 391
6. रामचरित मानस – गोस्वामी तुलसीदास, अयोध्या काड–101/8 पृ. 391
7. वक्तव्य : भारतीय संस्कृति के उन्नायक गोस्वामी तुलसीदास डॉ. रामशरण गौड़, ई–पत्रिका : आपकी माटी, 2 अगस्त 2018, अंक–27